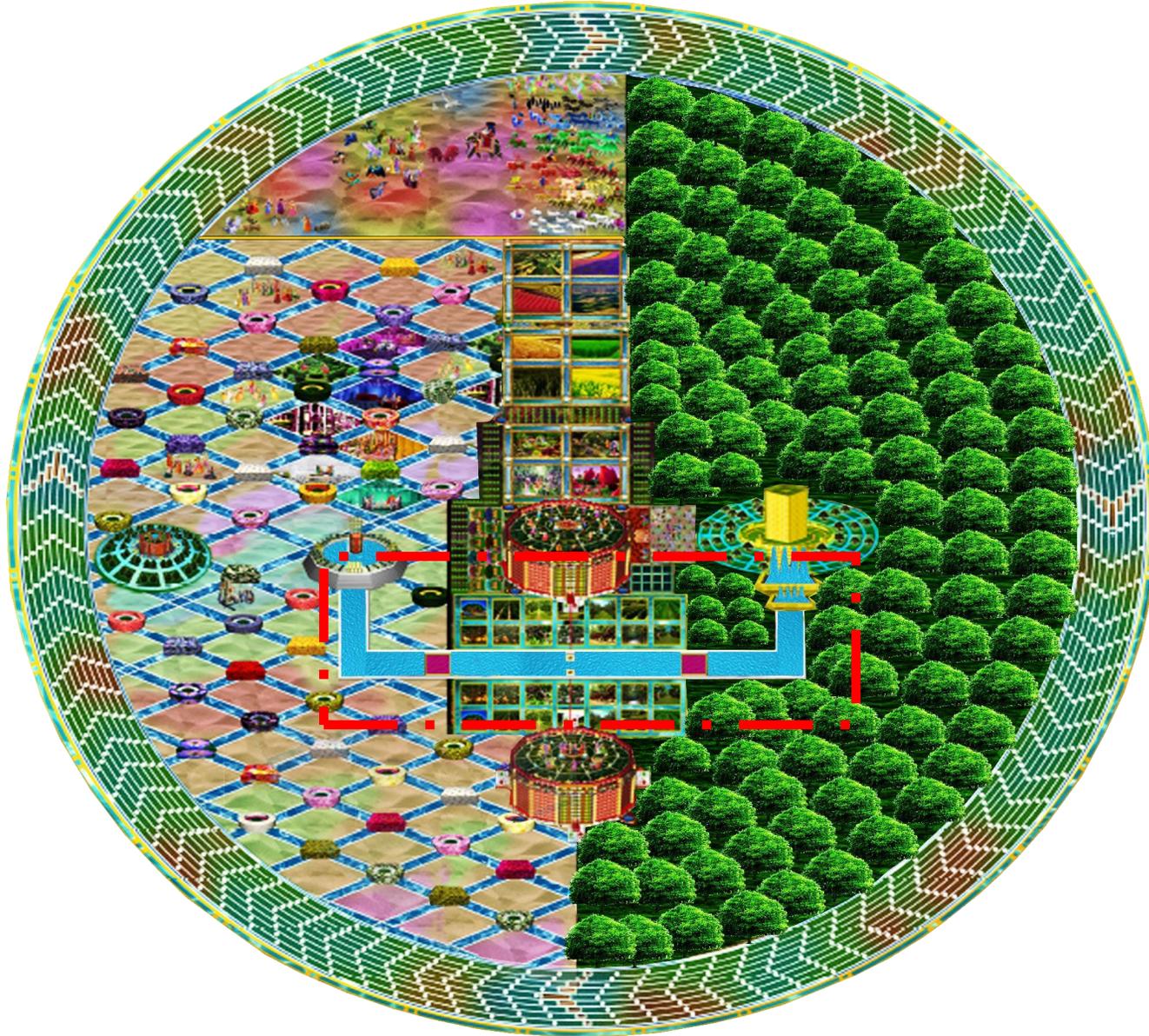


# जमुनाजी की शोभा





नूर नीर खीर दधि सागर , घृत मधु इक ठौर ।  
रस सर्वरस सागर , बिन मोमिन ना पावे और ॥

## जमुनाजी

धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे ।  
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए ।  
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के ॥



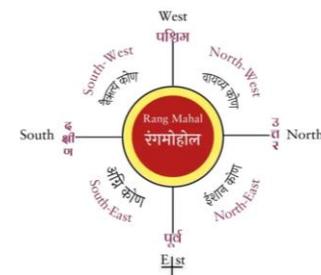
# जमुनाजी की शोभा

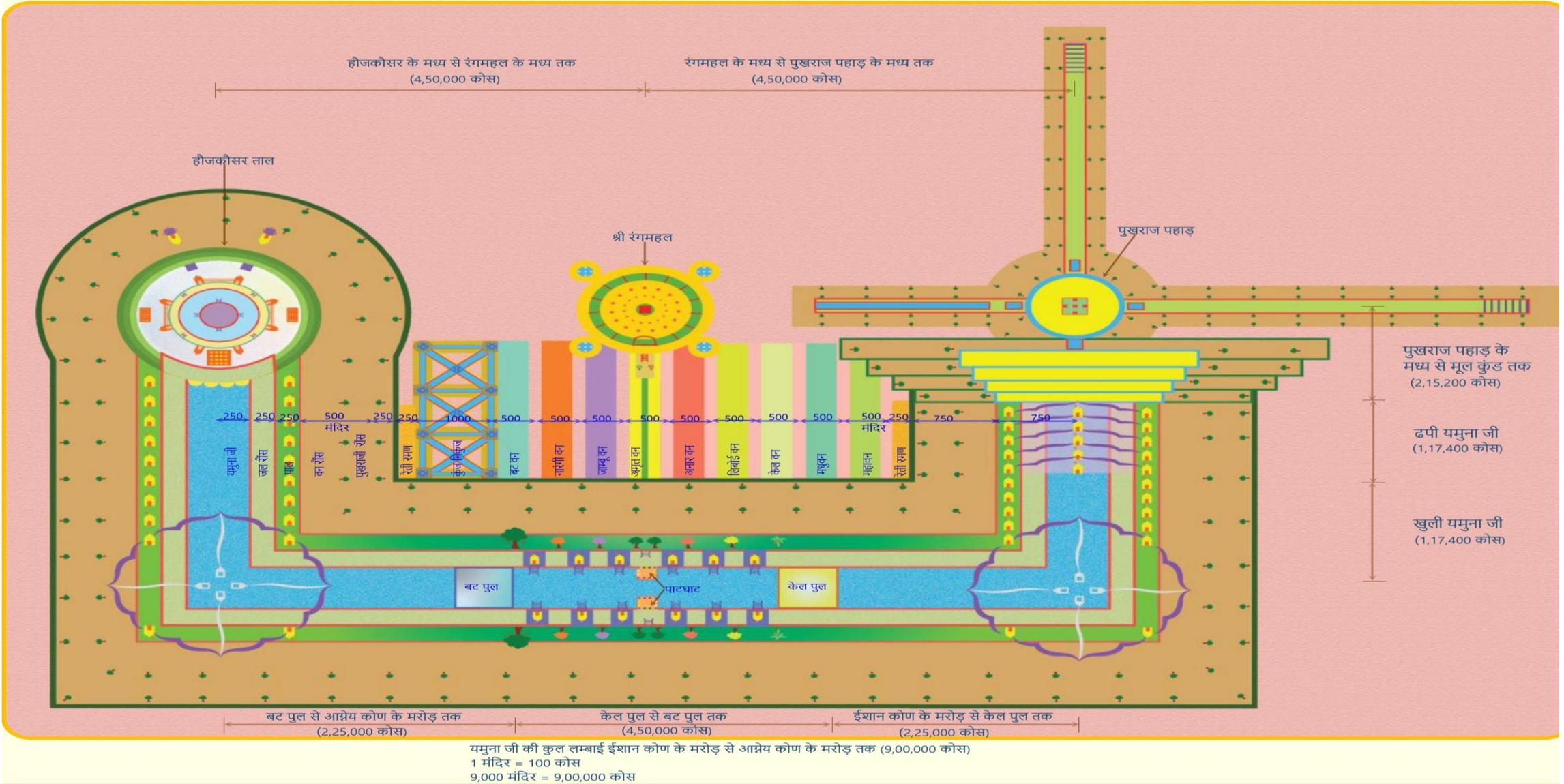
## परमधाम विहार - पूर्व

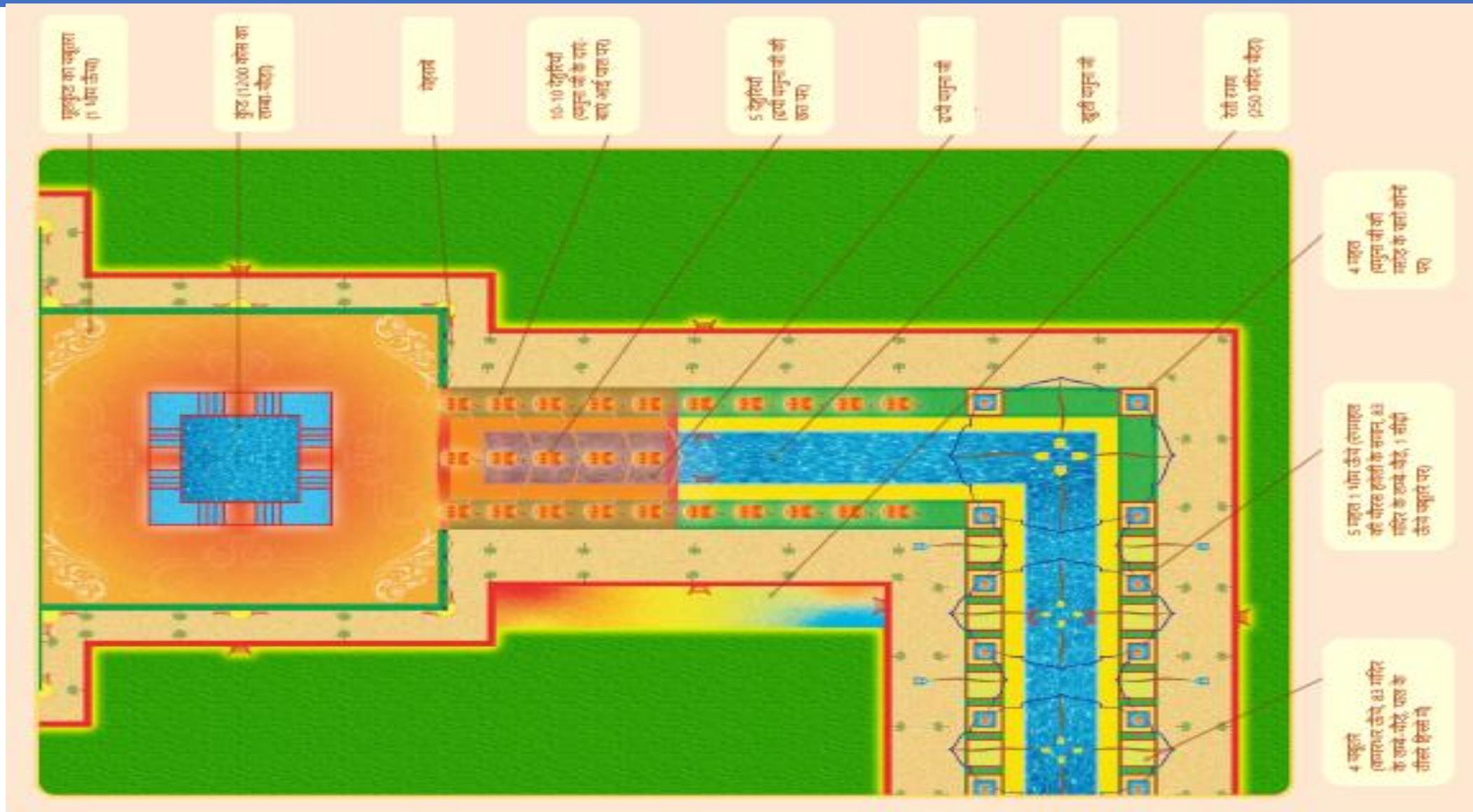
सुखपाल , तख्तरवा, सेर करते

### ऋष्ण पक्ष ( वद )

एकम	पात धाट
बीज	बट पुल
अमास	केल पुल







1 बगीचों की हार

1 महलों की हार

2 भोम

जल रौंस , पाल



सीडियाँ

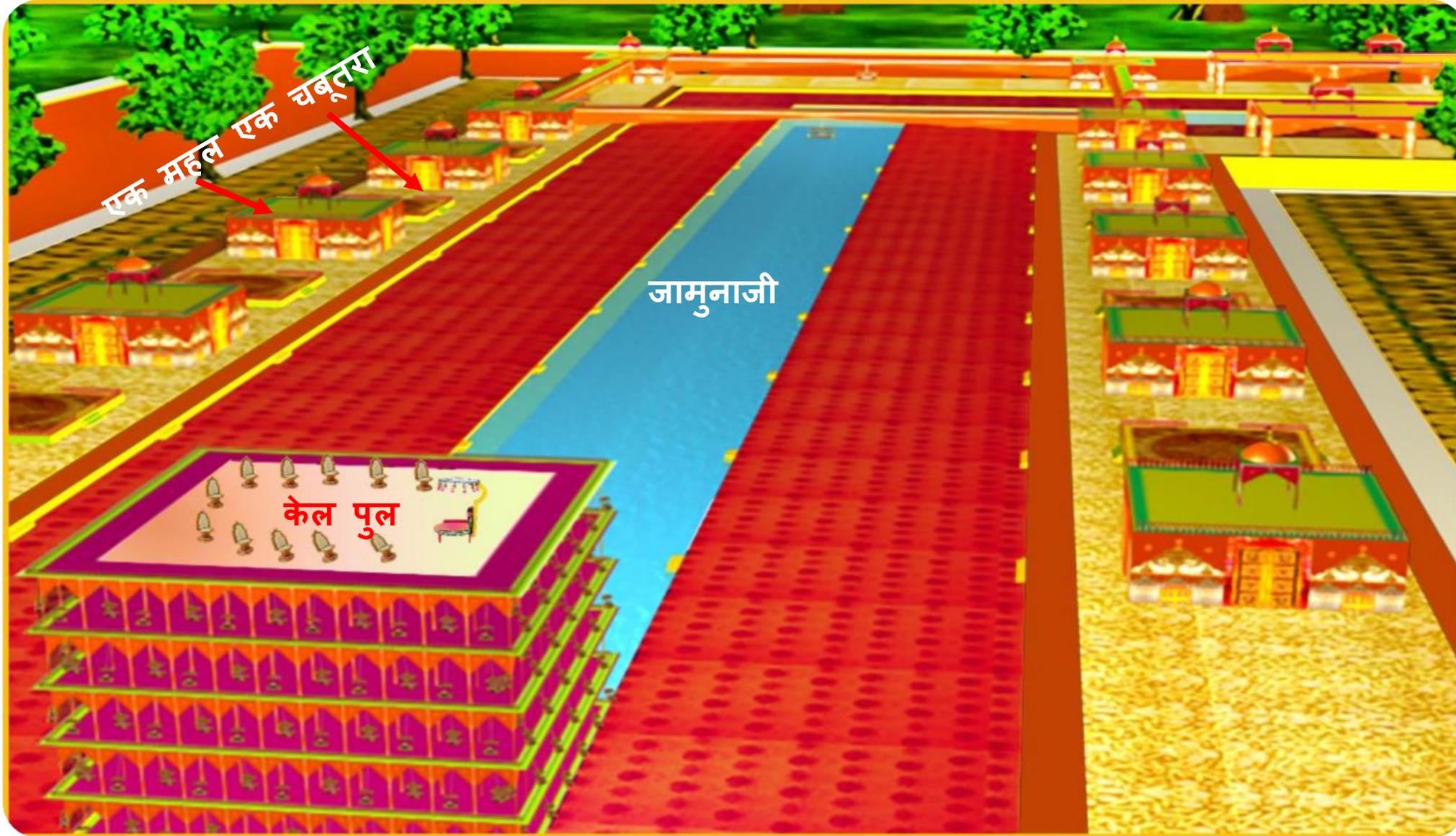
रौंस

मध्य से जमुनाजी





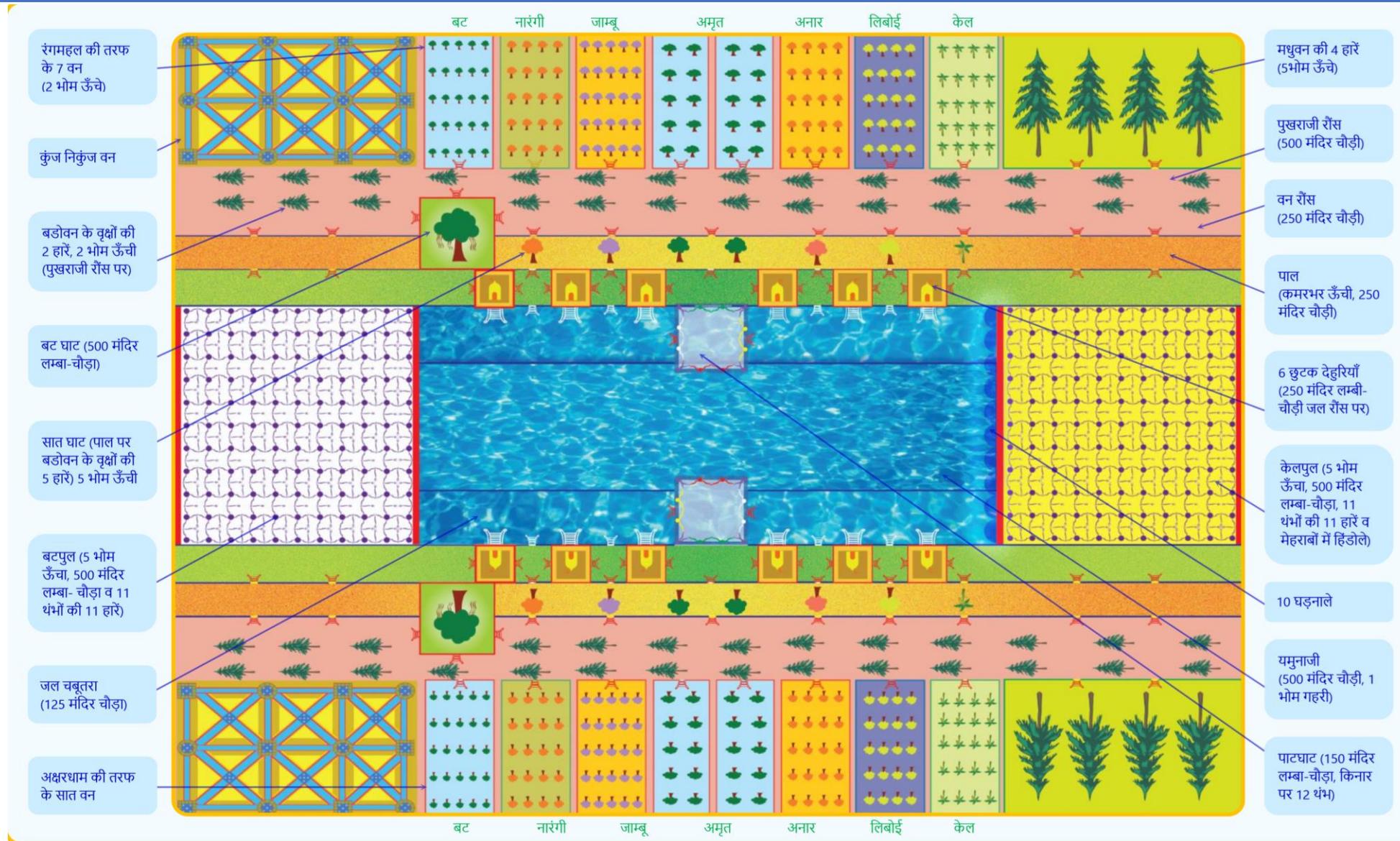


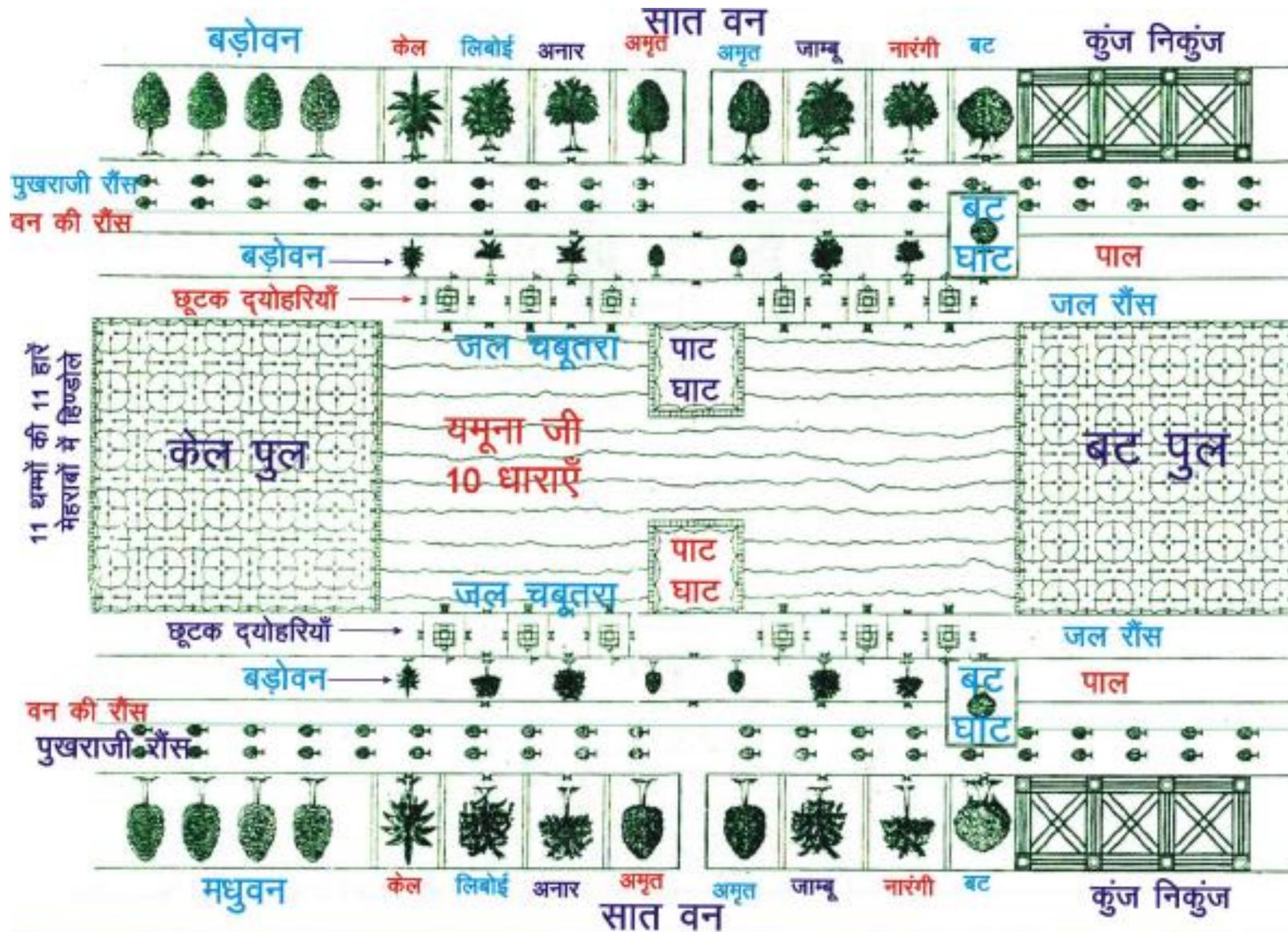




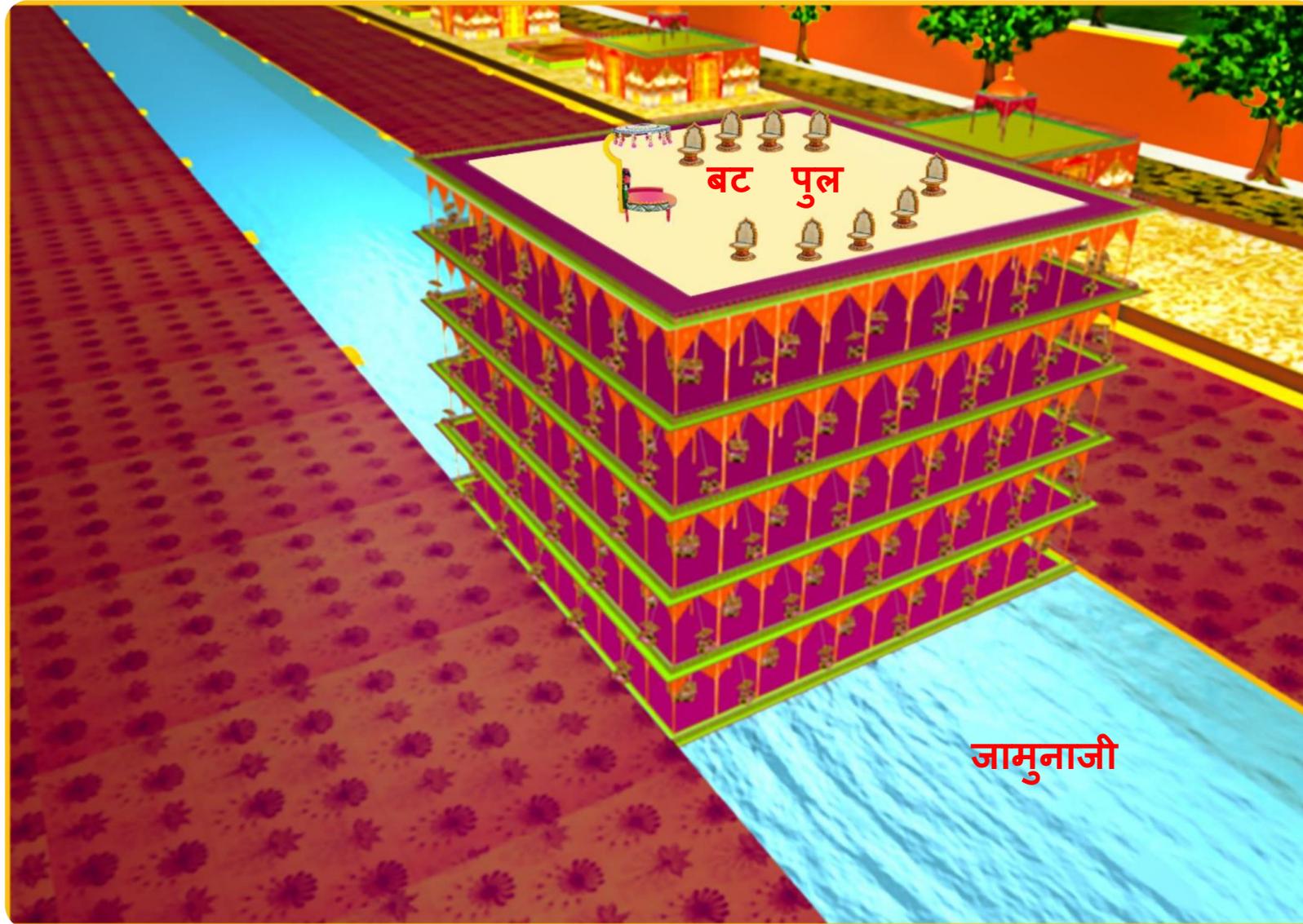






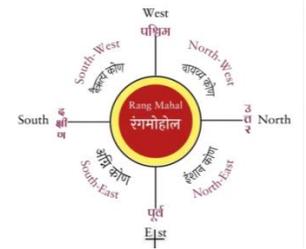






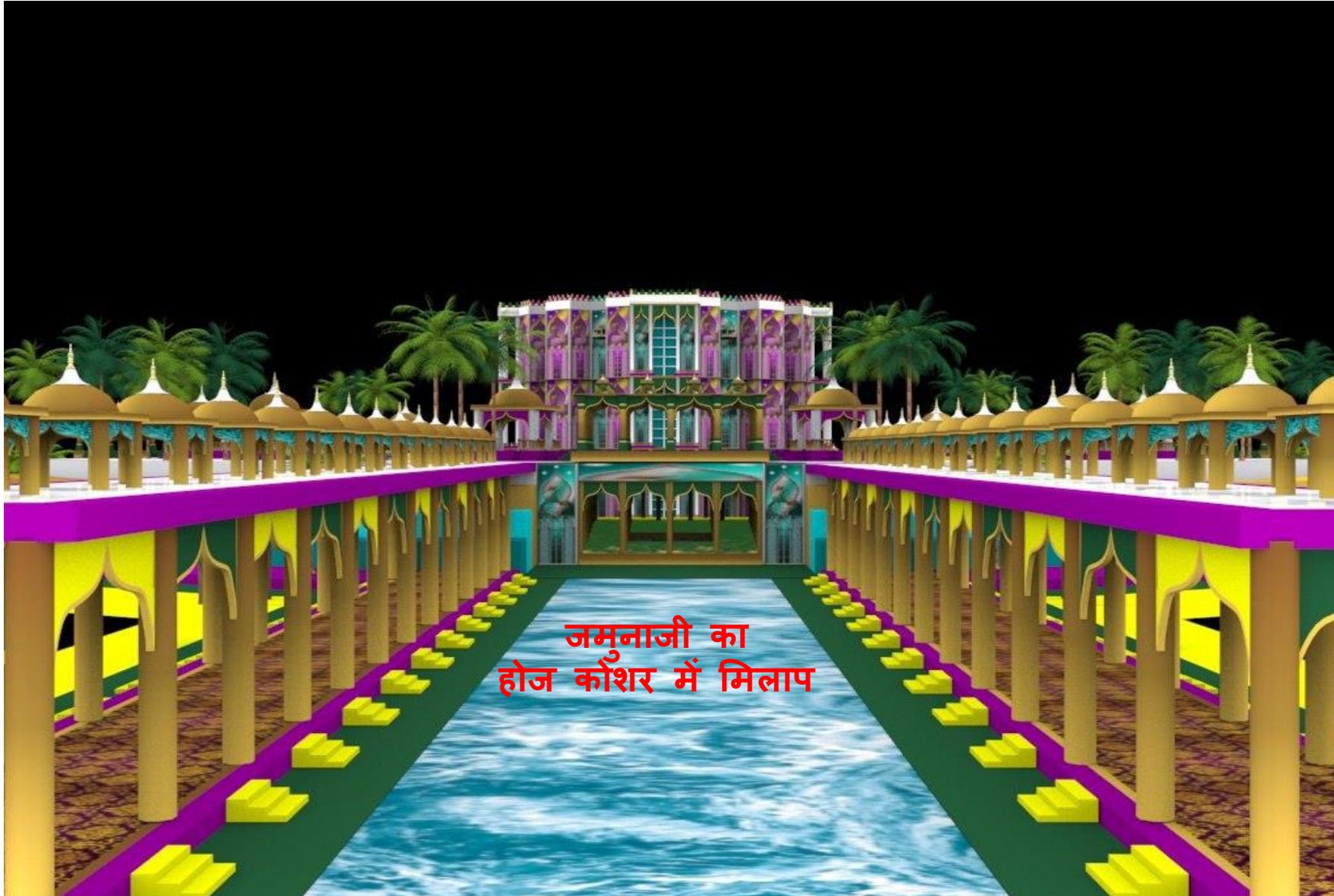






जमुना तरफ ताल के , जित जल भिल्या माहें जल ।  
दयोहरियाँ इन बंध पर , जल पर शोभित महल ॥







जो अंदर चारों घड़नाले, आगूं चबूतरा जल पर । तले जाली द्वारें पाल में , जित जल रहया समाए ।  
तले जल जाली बारों आवत, सोभा इन घाट कहूं क्यों कर ॥६४॥ इत बैठ झरोखों देखिए , जानों पूर आवत है धाए ॥







OR

